

عِيسَى الْمَسِيحُن تِ :

« وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،
كُ پَنُ فُدْمَنَشَن كَا اللّٰه يِ،
بَاوُ اللّٰنْمَرَنبِن نِ اِ يِ دَ،
وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،
كُ پَنُ كَا وُونُ،
بَاوُ اِ يَاخَنجِين وَ رِينِ سُوْرَ،
وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،
كُ پَنُ كُ نِ نُوْحُ يِ،
بَاوُ نِيپِين وَ رِينِ تَخَنَدِ اِ نَخَ،
وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،
كُ پَنُ، تِلِغْنَتَاخُن دَقْن دَا دُبْن كَا اِ يِ،
بَاوُ اللّٰه وَ رِينِ اِ فَاكُ،

وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،

كُ پَنُ كَا هِبْنِ،

بَاوُ اللّٰه وَ رِينِ هِنِ اِ يِ،

وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،

كُ پَنُ سَنَدْمُن خَلَسِنَشَن كُ نِ،

بَاوُ اِ وَ رِينِ اللّٰه وَرَ،

وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،

كُ پَنُ كُ دَا كُنْبِمَن سَبْتِنَدِ،

بَاوُ اِ وَ رِينِ خِرِ خِي اللّٰن رِنْمُ،

وُلِّغْنَتَاخُن وَ سَرَن دَ،

كُ پَنُ، اِ كُ دَا اِرْخُ تِلِغْنَتَاخُن سَابُ دَ،

بَاوُ اللّٰنْمَرَنبِن نِ اِ يِ دَ،

مَثَبِ لِنَجِيلِ ٥: ٣- ١٠